पाश – कविता रेजीमेंट का एक बहादुर सिपाही जो वीरगति को प्राप्त हुआ

अखतर अली

आमानाका, कुकुरबेडा,
रायपुर (छत्तीसगढ़)
मो. 9826126781

कविता शस्त्र कैसे बनती है, कलम से तलवार का मुकाबला कैसे किया जाता है, एक कविता पूरी व्यवस्था को कैसे तिलमिला देती है, चंद लाइनें बंदूक, बम और मिसाइल पर किस तरह भारी पड़ जाती है, यह जानना है समझना है तो पाश को पढ़िये, आप भी पाश की फौज में भर्ती हो जाएंगे जब पाश आपको कहेंगे –

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिये
हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिये
कत्ल हुए जज्बों की कसम खाकर
बुझी हुई नजरों की कसम खाकर
हाथों पर पड़े हुए घट्ठों की कसम खाकर
हम लड़ेंगे साथी
हम लड़ेंगे तब तक
जब तक वीरू बकरिहा
बकरियों का मूत पीता है
खिले हुए सरसों के फूल को
जब तक बोने वाले खुद नहीं सूंघते
कि सूजी आँखों वाली
गाँव की अध्यापिका का पति जब तक
युद्ध से लौट नहीं आता
हम लड़ेंगे जब तक
दुनिया में लड़ने की जरूरत बाकी है
जब तक बंदूक न हुई, तब तक तलवार होगी
जब तलवार न हुई, तब लड़ने की लगन होगी
लड़ने का ढंग न हुआ, लड़ने की जरूरत होगी
और हम लड़ेंगे साथी
हम लड़ेंगे
कि लड़े बगैर कुछ नहीं मिलता
हम लड़ेंगे
कि अब तक लड़े क्यों नहीं
हम लड़ेंगे
अपनी सजा कबूलने के लिए
लड़ते हुए जो मर गये
उनकी याद जिंदा रखने के लिए
हम लड़ेंगे

पाश की रचनाओं में शंखनाद है। कविता जो अपनी नज़ाकत और लचीलेपन के लिए जानी जाती है वह पाश तक आते आते नुकीले धारदार शस्त्र में तब्दील हो जाती है। पाश का साहित्य कविता में से निवेदन को नकार देता है, कविता में से कोमलता को हटा देता है, कविता में से प्रेम को बाहर का रास्ता दिखा देता है, कविता की प्रचलित परम्परा को तोड़ कर कविता को नये कलेवर में स्थापित करता है। पाश की कविताओं में जो कविताओं का पाशपन है, उसमें निवेदन नहीं आह्वान है, कोमलता नहीं खुरदरापन है, प्रेम नहीं आन्दोलन है। पंजाब का यह शेर जब अपनी रचना में दहाड़ता था तब उसकी गूँज से कुरीतियों का जंगल काँप उठता था, जरा उनके तेवर तो देखिये –

यदि देश की सुरक्षा यही होती है
कि बिना जमीर होना जिन्दगी के लिए शर्त बन जाए

“ पाश की रचनाओं में शंखनाद है। कविता जो अपनी नज़ाकत और लचीलेपन के लिए जानी जाती है वह पाश तक आते आते नुकीले धारदार शस्त्र में तब्दील हो जाती है। पाश का साहित्य कविता में से निवेदन को नकार देता है, कविता में से कोमलता को हटा देता है, कविता में से प्रेम को बाहर का रास्ता दिखा देता है, कविता की प्रचलित परम्परा को तोड़ कर कविता को नये कलेवर में स्थापित करता है। पाश की कविताओं में जो कविताओं का पाशपन है, उसमें निवेदन नहीं आह्वान है, कोमलता नहीं खुरदरापन है, प्रेम नहीं आन्दोलन है। पंजाब का यह शेर जब अपनी रचना में दहाड़ता था तब उसकी गूँज से कुरीतियों का जंगल काँप उठता था